B.A. III
Paper - VI Section-B

Topic - Satyagraha (सत्याग्रह)

सत्याग्रह शब्द दो शब्द के योग से बना है- 'सत्य' तथा 'आग्रह'। सत्य का अर्थ है- ईश्वर और आग्रह का अर्थ है- 'अडिग रहना'। इस प्रकार सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ है- ईश्वर या सत्य के मार्ग पर अडिग रहना। सत्याग्रह इस मान्यता पर आधारित है, कि सत्य का मार्ग ईश्वर का मार्ग है, अतः सत्य के मार्ग पर मनुष्य को निर्भयता पूर्वक चलते रहना चाहिए इसका आधार प्रेम है, ईश्वर एक है, जो विश्व के सभी प्राणियों में निवास करता है। इस प्रकार विश्व के प्रत्येक प्राणी के साथ मनुष्य का बन्धुत्व का संबंध है। अगर मनुष्य सम्पूर्ण मानव-जाति से प्रेम करता है, तो वह सत्याग्रह को अपना सकता है। सत्याग्रह की मान्यता पूर्वजन्म की धार्मिक मान्यता पर भी आधारित है। एक सत्याग्रही सत्य के मार्ग पर तभी चल सकता है, जब उसे यह विश्वास हो जाए, कि इस मार्ग पर चलने का फल उसे अगर वर्तमान जीवन में नहीं मिलता है, तो भविष्य जीवन में निश्चित रूप से उसे इस मार्ग पर चलने का फल मिलेगा। कभी-कभी ऐसा होता है, कि सत्य के मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति अपने वर्तमान जीवन में अनेक प्रकार के कष्टों को झेलता है। अगर उसकी आस्था भविष्य जीवन में नहीं हो तो वह वर्तमान जीवन के फल को देखकर कभी भी सत्याग्रह के मार्ग को नहीं अपनाता। एक सत्याग्रही को यह विश्वास रहता है कि उसके अपने कर्मों का फल भविष्य जीवन में मिलेगा, यही कारण है कि महात्मा गाँधी ने लिखा है -" With the Knowledge that the soul survives the body, he (the Satyagrahi) is not impatient to see the triumph of truth in the present body."

सामाजिक क्रांति के तीन तरीके हैं- कत्ल, कानून और करुणा। कत्ल का रास्ता सामान्य जनता का रास्ता नहीं है। कानून का रास्ता भी लोकतंत्र में अन्याय हटाने में सफल नहीं होता, यदि लोग आदत में सुधार या परिवर्तन नहीं चाहते हों। सुधार के लिए सक्रिय सहमति खड़ी होनी चाहिए, तभी वह सफल होता है। पहले व्यक्ति-व्यक्ति के आदत और विचारों का परिवर्तन, फिर जीवन परिवर्तन और अन्त में सामाजिक संस्थाओं का नया परिवर्तन, निर्माण इसी क्रम में क्रांति आती है। यह कार्य तो करुणा कर सकती है। मनुष्य की पशुता उसमें राग, द्वेष और अहंकार की उत्पत्ति करते हैं। वे युद्ध का

Scanned with CamScanner

वातावरण तैयार करते है। युद्ध से मानव की पीड़ा बढ़ती है, निर्दोष मरते है। इसलिए गाँधी जी का विश्वास था कि अन्याय को मिटाने का सच्चा तरीका यह है कि अपने कष्ट सहने और उच्च चरित्र के द्वारा अत्याचारी की अन्तरात्मा और बुद्धि को प्रभावित करके उसके विचार बदले जाएँ और उसे स्वेच्छापूर्वक नई समाज-व्यवस्था का सहायक बनाया जाए। इस काम के लिए उन्होंने जिस कार्य पद्धति का विकास किया वह सत्याग्रह की अर्थात स्वयं अवर्णनीय कष्ट उठाकर और मृत्यु का आलिंगन करके सत्य और अहिंसा पर अटल रहने की पद्धति है। सत्याग्रह का उद्देश्य मात्र एक नई सामाजिक संरचना ही नहीं, एक नया मानव बनाना है।

सत्याग्रह की अवधारणा गाँधी जी के दर्शन की एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण मौलिक विशेषता मानी जाती है। गाँधी जी ने सत्याग्रह को एक ऐसी पद्धति के रूप में स्वीकार किया है, जिसके द्वारा सभी प्रकार के बुराई का अन्त किया जा सकता है। स्वयं इन्होंने इसका प्रयोग सर्वप्रथम 1906 ई० में दक्षिण अफ्रीका में किया था, वहाँ की सरकार भारतीयों के प्रति अत्याचार करती थी और भारतीयों को अपना अधिकार दिलाने के लिए महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह का प्रयोग किया था। गाँधी जी के अनुसार सत्याग्रह का अर्थ है, Truth force। Tolstoy के अनुसार सत्याग्रह का अर्थ Love force, or Soul force है। सत्याग्रह हिंसा तथा भौतिक शक्ति से सर्वथा पृथक है। इसके अन्तर्गत न तो हिंसा का प्रयोग किया जाता है, न तो भौतिक शक्ति का। राजनीतिक तथा घरेलू मामले में किसी भी समस्या के समाधान के लिए इसका प्रयोग संभव है। स्त्री, पुरुष, बच्चे, वृद्ध सभी इसका प्रयोग कर सकते है। किसी भी प्रकार के अन्याय या बुराई को समाप्त करने के लिए सत्याग्रह का प्रयोग किया जा सकता है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और यहाँ तक की धार्मिक समस्याओं के समाधान ~~के लिए~~ भी गाँधी जी ने सत्याग्रह के द्वारा संभव माना है।

गाँधी जी के अनुसार सत्याग्रह की पद्धति दबाव की पद्धति नहीं है, बल्कि हृदय परिवर्तन की पद्धति है इसके द्वारा विरोधी व्यक्ति पर कोई दबाव नहीं डाला जाता है बल्कि हृदय परिवर्तन की परिस्थिति का निर्माण किया जाता है। एक सत्याग्रही का उद्देश्य विरोधी को कष्ट प्रदान

Scanned with CamScanner

करना नहीं है, बल्कि हृदय परिवर्तन करना है। एक सत्याग्रही यह मानकर चलता है कि कोई भी व्यक्ति शत्रु नहीं है और न कोई विरोधी है, बल्कि वह किसी खास परिस्थिति में पड़कर गलत काम करने को बाध्य होता है। इसलिए महात्मा गाँधी ने अँग्रेजों के विरुद्ध जब इस पद्धति का प्रयोग किया था तो इनकी मान्यता थी कि अँग्रेजों से हमारी कोई शत्रुता नहीं है, बल्कि अँग्रेजों की शासन पद्धति से हमारी शत्रुता है। इनका नारा था —
" Hate the Sin not the Sinner."

गाँधी जी के अनुसार सत्याग्रह का मार्ग प्रत्येक व्यक्ति के लिए खुला हुआ है, लेकिन जो व्यक्ति इस मार्ग पर चलना चाहता है, उसे कुछ मौलिक विशेषताओं से युक्त होना पड़ेगा। सर्वप्रथम उसे ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ होना चाहिए। उसे उदार दृष्टिकोण को अपनाना चाहिए। उसे मन, कर्म, वचन के बीच समन्वय रखना चाहिए। उसे पूर्ण रूप से निर्भय होना चाहिए। अहिंसा का अस्त्र दुर्बल व्यक्तियों के लिए नहीं है, उसमें सहनशीलता होनी चाहिए। ईश्वर और सत्य में उसे अटूट विश्वास होना चाहिए। एक सत्याग्रही को इस विश्वास से आगे बढ़ना चाहिए कि सम्पूर्ण मानव जाति एक है, क्योंकि ईश्वर एक है और प्रत्येक मनुष्य उस एक ईश्वर की सन्तान है। एक सत्याग्रही स्वार्थमूलक भावना से परे होता है, वह ऐसा कर्म सम्पादित नहीं करता जिससे कि उसे अपना भलाई हो, बल्कि ऐसा कर्म सम्पादित करता है, कि जिससे कि सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण हो। सत्याग्रही को एक अनुशासित सिपाही कहा जाता है। वह यह समझता है कि सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण में ही उसका कल्याण निहित है।

महात्मा गाँधी सत्याग्रह के अनेक रूप मानते हैं, इनमें महत्वपूर्ण रूप निम्नलिखित हैं —

(i) समझौता (Negotiation)
(ii) पंचायत (Arbitration)
(iii) आन्दोलन एवं प्रदर्शन (Agitation and Demonstration)
(iv) आर्थिक बहिष्कार (Economic Boycott)
(v) असहयोग (non-Co-operation)
(vi) सविनय अवज्ञा (Civil Disobedience)
(vii) प्रत्यक्ष प्रयोग (Direct Action)
(viii) कानून की सामूहिक अवज्ञा (open disobedience of Law)
(ix) उपवास (Fasting)
(x) निष्क्रिय प्रतिरोध (Passive resistance)

(xi) हड़ताल (Strike)
(xii) सहयोग के लिए आग्रह करना (Picketing)
(xiii) कर नहीं लेना (non-payment of taxes)
(xiv) धरना (Dharna)

स्वयं गाँधी जी ने सत्याग्रह के इन विभिन्न रूपों को प्रोत्साहन नहीं दिया है, बल्कि इनमें से चार रूपों को ही प्रोत्साहन दिया है। इनके नाम हैं – असहयोग, साक्षात प्रदर्शन, उपवास तथा अवज्ञा। अवज्ञा का अर्थ है- अनुचित नियमों को स्वीकार नहीं करना। असहयोग का अर्थ है- हर शोषित को शोषित होने से रोकना। साक्षात् प्रदर्शन का अर्थ है- सामूहिक रूप से प्रतिरोध करना। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण सत्याग्रह का रूप उपवास या व्रत है। इसके विषय में गाँधी जी ने लिखा है – " My religion teaches me that whenever there is distress which one can not remove one must fast and pray."

गाँधी जी ने सत्याग्रह तथा निष्क्रिय प्रतिरोध में भेद किया है। निष्क्रिय प्रतिरोध में शारीरिक शक्ति का प्रयोग किया जाता है, फलस्वरूप हिंसा का स्थान है, लेकिन सत्याग्रह पूर्णरूप से अहिंसात्मक होता है। निष्क्रिय प्रतिरोध में प्रेम की भावना नहीं है और सत्याग्रह में घृणा की भावना नहीं है। निष्क्रिय प्रतिरोध में प्रतिद्वन्दी पर दबाव डाला जाता है, लेकिन सत्याग्रह में प्रतिद्वन्दी का हृदय परिवर्तन की बात कही जाती है। निष्क्रिय प्रतिरोध कमजोर व्यक्ति का अस्त्र है, लेकिन सत्याग्रह एक शक्तिशाली व्यक्ति का अस्त्र है।

प्रजातांत्रिक व्यवस्था में सत्याग्रह की प्रासंगिकता और भूमिका के संबंध में प्रश्न उठाये जा सकते हैं। प्रश्न उठता है कि जब लोकतंत्र सत्य और न्याय पर आधारित होता है, तो फिर लोकतांत्रिक स्थिति में इसकी क्या महत्ता है। यह ठीक है कि वास्तविक लोकतंत्र के विरुद्ध सत्याग्रह करने की आवश्यकता नहीं होगा। लेकिन जहाँ लोकतंत्र कहने मात्र के लिए हो, जो लोक आत्मा को कुचल दे, उस लोकतंत्र में सत्याग्रह की आवश्यकता होती है। जिसके द्वारा रोगग्रस्त लोकतंत्र को रोगमुक्त किया जा सकता है। आज भारत और प्रायः विश्व भर में अन्यायपूर्ण

व्यवस्था के विरुद्ध जो भी आवाज उठ रही है, वे किसी न किसी रूप में सत्याग्रह से जुड़ी हुयी है। सत्याग्रह के विभिन्न रूप असहयोग आन्दोलन, हड़ताल, अनशन, शांतिपूर्ण प्रदर्शन आदि आज विश्व भर में लोकप्रिय और प्रचलित है। साम्यवादी देशों में भी जहाँ हिंसात्मक नीतियों पर विश्वास किया जाता है, विरोध के शांतिपूर्ण तरीकों की महत्ता स्थापित हो रही है। आज अन्तर्राष्ट्रीय जगत में जब परमाणु विश्व युद्ध के काले बादल अधिक घनीभूत हो रहे हैं, अतः 'शिशुपाल से नरम' आदि नाम दरकी मानवता के लिए सत्याग्रह एकमात्र सबल मार्ग है। हिंसा आज हिंसा से बचाने के लिए out dated हो चुकी है। मानव गरिमा में पूर्ण आस्था रखते हुए अहिंसा के लिए केवल परिवर्तन और युग की आवश्यकता है - "सत्यमेव जयते" पर आधारित सत्याग्रह, जो अपराजेय है।

मूल्यांकन :-

सत्याग्रह का सफल होना वहीं संभव है, जब दोनों पक्ष प्रेम सूत्र में बंधे हों। लेकिन आज के युग में सत्याग्रह बिल्कुल व्यवहारिक नहीं लगता।

गाँधी जी और सत्याग्रह का असफल होना बिल्कुल स्वभाविक था, क्योंकि गाँधी जी का मस्तिष्क अंधविश्वासों का भंडार था तभी तो उन्होंने 1934 के भूकम्प का कारण बताते हुए कहा था कि भारतीय समाज में व्याप्त छुआ-छूत के कारण ही यह विपत्ति आती है। उनकी बुद्धि धर्म की चहारदीवारी से घिरी थी, और वे प्रकृति, समाज तथा चिन्तन की समस्याओं के उचित समाधान खोजने में असमर्थ थी।

Conclusion :- लेकिन फिर भी यह निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है, कि सत्याग्रह को एक अहिंसात्मक पद्धति के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसके द्वारा किसी भी बुराई का अन्त किया जा सकता है। स्वयं गाँधी जी ने इस पद्धति का प्रयोग करके भारतवर्ष को अंग्रेजों के चंगुल से छुड़ाकर स्वतंत्रता दिलाई थी। आज के युग में भी इस पद्धति का अनेक क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता है।